मनोज
चित्र
कथा
मूल्य 6.00
मौत बेचने वाले
डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½
राम-रहीम
321
M. Vitankar
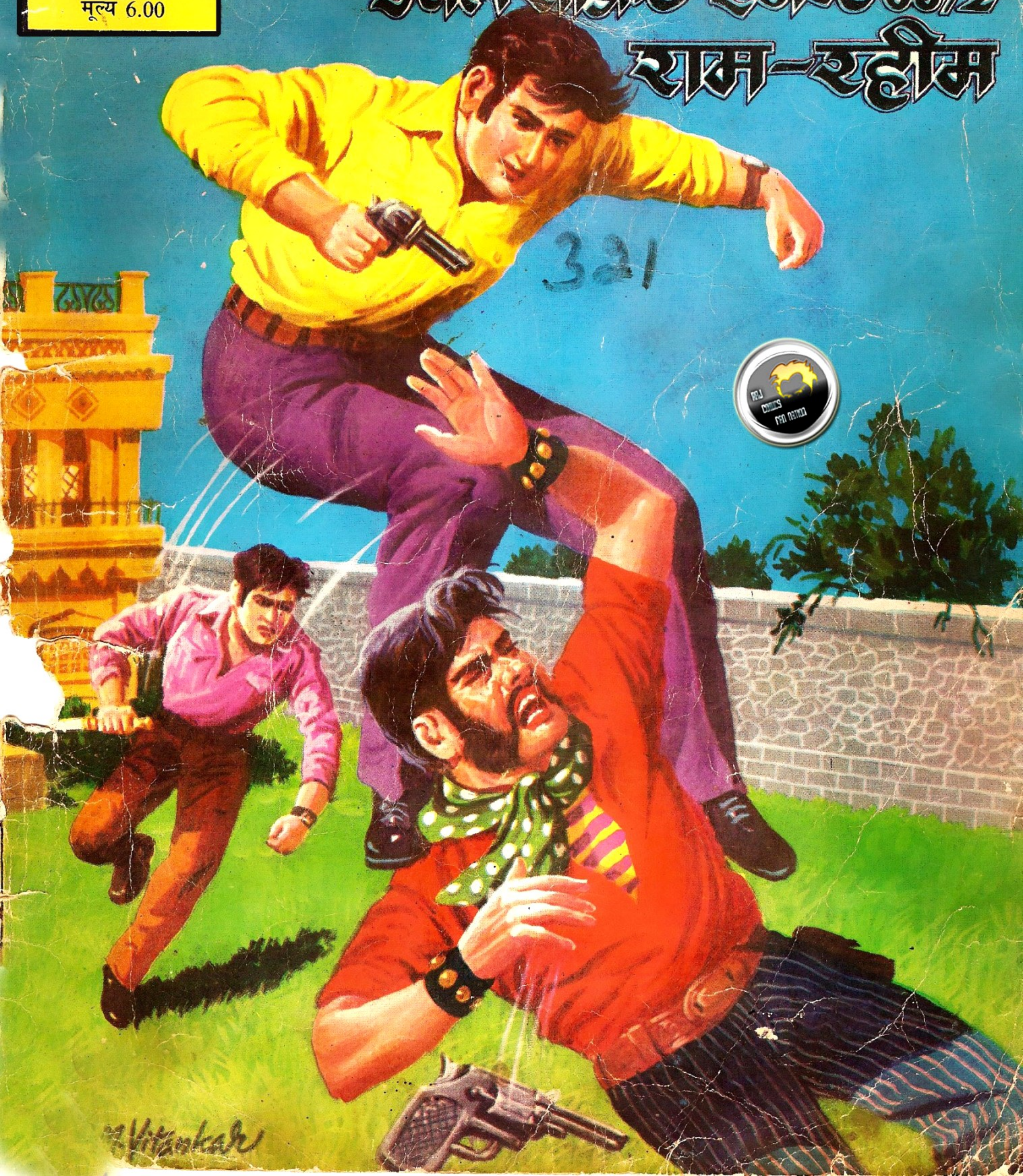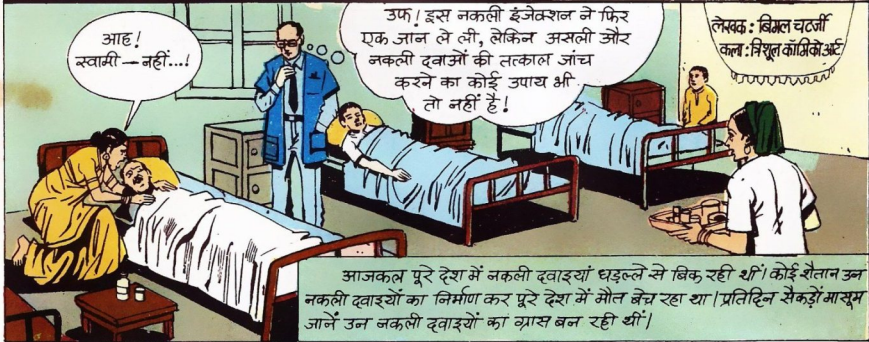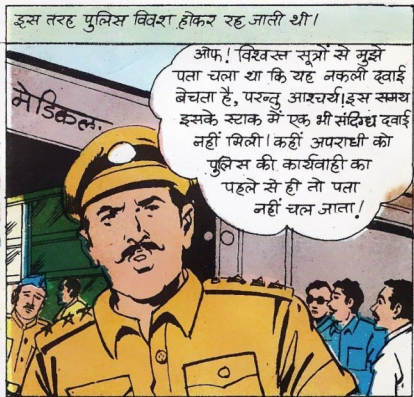
मौत बेचनेवाले

डबल सीक्रेट एजेन्ट 00 1/2

राम-रहीम

लेखक : बिमल चटर्जी
कला : त्रिशूल कॉमिक्स आर्ट

आह! स्वामी — नहीं...!

उफ! इस नकली इंजेक्शन ने फिर एक जान ले ली, लेकिन असली और नकली दवाओं की तत्काल जांच करने का कोई उपाय भी तो नहीं है!

आजकल पूरे देश में नकली दवाइयां धड़ल्ले से बिक रही थीं। कोई शैतान उन नकली दवाइयों का निर्माण कर पूरे देश में मौत बेच रहा था। प्रतिदिन सैकड़ों मासूम जानें उन नकली दवाइयों का ग्रास बन रही थीं।

हाय! मेरा लाल।

सॉरी इंस्पेक्टर, इस बच्चे की मौत इस नकली दवा के कारण हुई है।

इस शीशी को कब्जे में ले लो हवलदार रामसिंह!

यस सर!

मामला केवल नकली दवाओं का नहीं था, बल्कि जाली करेंसी का भी था। जो नकली दवाओं के साथ-साथ ही पूरे देश में तेजी से फैलाई जा रही थी। असली और नकली नोटों में अन्तर करना भी मुश्किल था।

सुनो, उन सभी बैगों में एक-एक लाख के नकली नोट हैं। मैं चाहता हूं कि वे तीन दिन के भीतर-भीतर असली हो जाएं।

हो जायेंगे बॉस! आप निश्चिंत रहें।

यदि आप लोगों की कोशिशें ऐसी ही रहीं तो वह दिन दूर नहीं, जब सरकार को पुलिस विभाग की जरूरत ही नहीं रह जाएगी...

बेकार है। अब मुझे विश्वास हो चुका है कि इन केसों को हैण्डल करना आपके बस की बात नहीं है। अतः मैंने और अधिक समय नष्ट करने की बजाए ये दोनों केस सीक्रेट सर्विस के हवाले करने का फैसला कर लिया है।
ओह!
मजबूरी में कमिश्नर साहब को दोनों केसों की फाइलें गृहमंत्री को सौंपनी पड़ीं।

अगले दिन गृहमंत्री ने सीक्रेट सर्विस के चीफ मि॰ मुखर्जी को बुलवा भेजा।
मि॰ मुखर्जी, नकली दवाइयों और जाली करेन्सी वाले दोनों केस मैं आपके सुपुर्द करता हूं। ये उन दोनों केसों की फाइलें हैं...

... और हां, इन दोनों अवैध धंधों में लगे मुजरिम जल्द-से-जल्द पकड़े जाने चाहिये, वरना आप स्वयं ही अंदाजा लगा सकते हैं कि ये खतरनाक अपराधी पूरे देश के लिये आगे चलकर कितनी बड़ी मुसीबत बन जायेंगे।

आप निश्चिंत रहें सर! अपराधी जो कोई भी हैं, अब ज्यादा दिनों तक आजाद नहीं रह पायेंगे। जल्द ही कानून का कठोर पंजा उनकी गर्दन पर होगा।
गुड। मेरी शुभ-कामनाएं आपके साथ हैं। अब आप जा सकते हैं।
गृहमंत्री से विदा लेकर चीफ मुखर्जी वापस लौट पड़े।

इधर कर्नल राघव की कोठी पर—
राम भइया, आज हम सारा दिन तफरीह में बाहर ही गुजारेंगे। पहले मार्निंग शो देखेंगे, फिर किसी होटल में लंच लेंगे। उसके बाद मेरुंड लेक चलकर बोटिंग करेंगे। उसके बाद फिर ईवनिंग शो देखेंगे और उसके बाद...

बस-बस, आगे का प्रोग्राम मैं समझ गया। फिलहाल तुम बनना-संवरना बन्द करो और जल्दी से घर से निकल चलो। शुक्र समझो कि डैडी किसी काम से बाहर गये हैं और मम्मी घर के काम-काज में जुटी हैं...

... वरना समय से पहले ही तुम्हारी सारी इच्छाओं का गला घुट जाता।
अरे, तो यार चलो न — मैं तो बिल्कुल तैयार हूं।

परन्तु जैसे ही वे कमरे से बाहर निकलने को हुए —
ट्रिन ट्रिन ट्रिन
इस कम्बख्त फोन को भी इसी समय रोना था।

ठहरो, मैं देखता हूं।

हैलो, राम स्पीकिंग।
बेटे राम, मैं तुम्हारा चीफ अंकल बोल रहा हूं। तुम तुरन्त रहीम के साथ हैडक्वार्टर चले आओ।

कोई विशेष बात चीफ?
हां, लेकिन वह बात मैं तुम्हें फोन पर नहीं बता सकता।

ठीक है चीफ, हम पन्द्रह मिनट में पहुंच रहे हैं।

शायद चीफ का फोन था?
हां, उन्होंने हमें तुरन्त हैडक्वार्टर बुलाया है।

वह तो मैं फोन की घंटी बजते ही समझ गया था कि इतनी सुबह यदि कोई हमारे प्रोग्राम का सत्यानाश कर सकता है तो वे चीफ ही हो सकते हैं।
अच्छा- अच्छा, अब मिर्चें चबाना छोड़ो, और मेरे साथ हैडक्वार्टर चलो।

ठीक पन्द्रह मिनट पश्चात् वे चीफ मुखर्जी के आफिस में उनके सामने बैठे थे।
क्या बात है चीफ! आज काफी समय बाद हम आपको फिर अत्यंत गंभीर देख रहे हैं।
बात ही कुछ ऐसी है मेरे बच्चो...

... आजकल देश में नकली दवाइयां और जाली नोट धड़ल्ले से बेचे जा रहे हैं। इन नकली दवाओं और जाली नोटों से न केवल अब तक सैकड़ों लोग बरबाद हो चुके हैं, बल्कि हजारों मासूम एवं बेगुनाह इंसान काल का ग्रास बन चुके हैं...

... जबकि इन धंधों के पीछे लगे जहरीले सांप कानून और इंसानियत की बेबसी पर अट्टहास लगाते हुए धन बटोर रहे हैं।
कहकर चीफ ने उन्हें सारी बात कह सुनाई।

सबकुछ सुनकर राम-रहीम का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा।
आप चिंता न करें चीफ! इंसान की खाल में छुपे उन हिंसक भेड़ियों को हम पाताल से भी खोज निकालेंगे, जो अपने घिनौने स्वार्थ के लिए देश और मासूम जिंदगियों से खिलवाड़ कर रहे हैं।

मुझे विश्वास है मेरे बच्चो कि तुम्हारे रहते वे आस्तीन में छुपे सांप अब ज्यादा दिन तक आजादी की सांस नहीं ले पायेंगे, फिर भी इन्सान-रूपी हिंसक भेड़ियों के विरुध्द जो भी एक्शन लो, सोच-समझकर लेना ...

... क्योंकि जो लोग अब तक सैकड़ों इन्सानों की जानें बिना वजह ही ले चुके हैं, उनके लिए तुम दोनों की जान किसी कीड़े-मकोड़े से अधिक महत्व नहीं रखती।
हम ध्यान रखेंगे चीफ। अब आप यह बताएं कि नकली दवाइयों का चक्कर अब तक किस क्षेत्र में ज्यादा प्रकाश में आया है।

रामनगर में, और यह बात तुम भी अच्छी तरह जानते हो कि वह सबसे ज्यादा आबादी वाला शहर है।
हुं, तब हम वहीं से अपनी खोजबीन आरम्भ करेंगे। चलो रहीम।

ओ.के. चीफ। अब हमें आज्ञा दीजिये। हम कल ही रामनगर के लिये रवाना हो जायेंगे। कोई विशेष बात हुई तो हम वॉच ट्रांसमीटर द्वारा आपसे सम्पर्क कर लेंगे।
जाओ, ईश्वर तुम्हें जल्द-से-जल्द सफलता प्रदान करे।

चीफ से विदा लेकर दोनों जैसे ही अपने घर के निकट पहुंचे, एक पड़ोसी के घर के भीतर और बाहर लगी भीड़ को देखकर वे बुरी तरह चौंक उठे।
अरे, यह वर्मा अंकल जी के यहां भीड़ और पुलिस कैसी?
वे बीमार थे। ईश्वर न करे उन्हें कुछ हो गया हो। चलो देखते हैं।

लेकिन जैसे ही वे दरवाजे पर पहुंचे, ठिठक गए।
अरे! राम-रहीम!
उआ-उआ-उआ

हां बेटे, आज सुबह वर्माजी की तबीयत ज्यादा बिगड़ने पर जब एक डॉक्टर ने आकर उन्हें इंजेक्शन लगाया तो उसके कुछ देर बाद ही उनकी मृत्यु हो गई। जांच करने पर पता लगा कि वह इंजेक्शन नकली था।

ओह, तो इसका मतलब यह हुआ कि यह छूत की बीमारी फैलती-फैलती हमारे शहर में भी आ पहुंची है!

बातें करते हुए वे तीनों लॉन में निकल आये।

इंस्पेक्टर अंकल, क्या आपने डॉक्टर से पूछा कि वह इंजेक्शन उन्होंने कहां से खरीदा था?

इंजेक्शन उन्होंने स्वयं नहीं खरीदा था, बल्कि यहीं के एक नौकर को भेजकर शहर के एक प्रसिद्ध मेडिकल स्टोर, रतन मैडिको से मंगवाया था।

तब तो आपको उसके मालिक को तुरन्त गिरफ्तार कर लेना चाहिये।

उसके लिये मैं अपने मातहतों को भेज चुका हूं, लेकिन मुझे मालूम है कि उसे गिरफ्तार करने से कोई फायदा नहीं निकलेगा।

कारण?

...वैसे भी बेटे, रतन मेडिको का मालिक रतनलाल काफी पहुंच रखता है। बिना प्रमाण के उस पर हाथ डालना भी एक जोखिम भरा काम है। एक बार पहले भी उस पर हाथ डालने की वजह से एक इंस्पेक्टर सस्पेंड हो चुका है।

क्या मतलब? क्या इससे पहले भी उसकी दुकान से खरीदी गई दवा से किसी की मौत हो चुकी है?
हां, उसकी दुकान से खरीदी गई एक महंगी, किन्तु नकली दवाई से एक स्कूल का बच्चा खत्म हो चुका है, जबकि कानून उसका बाल भी बांका न कर सका।

तभी एक पुलिस जीप कोठी के प्रांगण में आकर रुकी।
मेरे मातहत आ गये हैं। आओ देखें कि वे क्या खबर लाए हैं?

क्या रहा शमशेर सिंह!
सर, पूरी सतर्कता से तलाशी लेने के बावजूद भी उनके यहां से कोई संदिग्ध दवाई अथवा इंजेक्शन नहीं मिला और वह उस इंजेक्शन के अपने यहां से बेचे जाने से भी इन्कार करता है, जिससे मि. वर्मा की मौत हुई है...

...अत: आपके आदेशानुसार मैंने उसे गिरफ्तार करने की कोशिश नहीं की।
यह तुमने अच्छा ही किया शमशेर सिंह। अब तुम फोटोग्राफरों को बुलाकर मि. वर्मा की लाश पोस्टमार्टम के लिये भिजवा दो।
राईट सर!

सब-इंस्पेक्टर और सिपाहियों के जाने के बाद—
सुन लिया राम! यदि मैं उसे गिरफ्तार करने का आदेश दे बैठता तो शायद इस बार मुझे अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ता।
समझ रहा हूं अंकल, लेकिन आप चिन्ता न करें। इस बार उसका पाला हमसे पड़ेगा। चलो रहीम।

अरे, कहां चल दिये तुम दोनों? कहीं मि. रतन पर हाथ मत डाल बैठना, वरना भारी मुसीबत में पड़ जाओगे।
आप हमारी चिंता न करें इंस्पेक्टर अंकल। बस तेल देखिए और उसकी धार, ओ. के.— टा—टा।

कोठी से बाहर निकलकर—
अब कहां चलनेका विचार है राम भइया? सारे प्रोग्राम की तो हो गई छुट्टी।
हमें इसी समय रतन मेडिको चलना है। आओ, पीछे बैठो।

फिर दोनों मोटर साइकिल पर सवार हो बाजार की ओर चल पड़े, जो वहां से एक-डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर था।
अरसदाजा०

कुछ देर बाद—
रतन मेडिकल इंगलिश दवाइयों के विक्रेता
वह रहा रतन मेडिको, लेकिन तुम्हारा इरादा क्या है?
बस, उस दुकान से एक नकली इंजेक्शन खरीदना चाहता हूं। नीचे उतरो।

मोटर साइकिल से उतरकर राम एक कागज पर जल्दी-जल्दी कुछ लिखने लगा।
यह तुम क्या लिखने लगे?
उसी इंजेक्शन का नाम, जो मैं उसकी दुकान से खरीदूंगा। यही इंजेक्शन वर्मा अंकल जी को दिया गया था।
ओह!

लिखने के बाद राम ने जेब से नकली मूंछें निकाल कर होंठों के ऊपर चिपकाईं और बालों को हाथों से अस्त-व्यस्त कर अकेला ही कैमिस्ट की दुकान पर पहुंच गया।
जनाब, मुझे जरा जल्दी है। कृपया यह इंजेक्शन निकाल दीजिये।
एक मिनट!

नया ग्राहक! इसे नकली इंजेक्शन आसानी से भेड़ा जा सकता है!
भाई, बिल-बुक इस समय नहीं है, बिना बिल के इंजेक्शन लेना हो तो मिल सकता है। कीमत तीस रूपये है।
अजी बिल का क्या मैं अचार डालूंगा! आप मुझे इंजेक्शन दीजिये और यह लीजिये तीस रुपये।

केशव, पर्ची में लिखा इंजेक्शन इन साहब को जरा जल्दी लाकर दो।
जी, बहुत अच्छा।
इसका मतलब है कि नकली माल इस समय भी इनके पास है!

कुछ मिनट बीतने पर—
इतनी देर हो गई, दवाई अभी तक नहीं आई। क्या आपका आदमी वह दवाई किसी दूसरे शहर से लेने गया है?
बस एक मिनट जनाब, अभी आ जाता है।

लीजिये आ गया। क्यों केशव, इतनी देर कैसे कर दी तुमने?
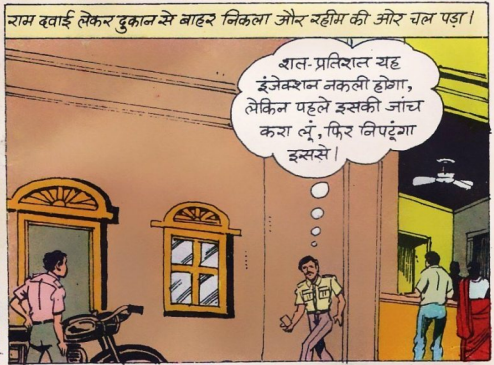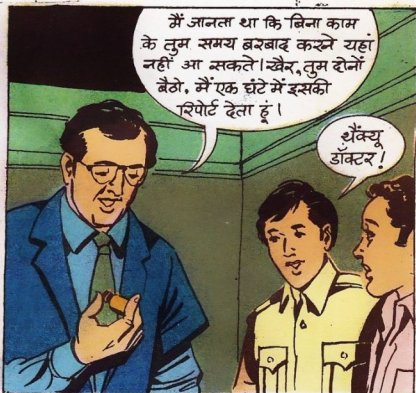
जनाब, अब यह इंजेक्शन स्टाक में और नहीं है। बड़ी मुश्किल से केवल यही एक पीस मिला है।
ठीक है, ठीक है। लाओ।

राम दवाई लेकर दुकान से बाहर निकला और रहीम की ओर चल पड़ा।
शत-प्रतिशत यह इंजेक्शन नकली होगा, लेकिन पहले इसकी जांच करा लूं, फिर निपटूंगा इससे।

क्या रहा ?
इंजेक्शन तो मिल गया, लेकिन इसकी जांच कराने के लिये हमें इसी समय मि० भटनागर की लेबोरेटरी चलना होगा।

भइया, तुम तो खामखवाह जांच करने के चक्कर में पड़ रहे हो। पहले इसकी गर्दन नापो, जांच फिर करा लेंगे।
यदि यह असली निकला तो !

वाकई ! तब तो हमारी ही गर्दन नप जायेगी।
बस, इसलिये मैं पहले इसकी जांच करा लेना चाहता हूं।

लगभग पन्द्रह मिनट के बाद दोनों मि० भटनागर की लेबोरेटरी में उनके सामने खड़े थे।
अरे, राम-रहीम !
हैलो मि० भटनागर !

राम भइया! मुझे तो आश्चर्य इस बात पर हो रहा है कि इंस्पेक्टर श्याम के मातहतों को उसकी तलाशी लेने पर कोई नकली दवाई क्यों नहीं मिली, जबकि उनके कुछ ही देर बाद जब हम पहुंचे तो उसने तुम्हें यह नकली इंजेक्शन उपलब्ध करा दिया।

इसका कारण भी अब मेरी समझ में आ रहा है रहीम...

...बिना प्रमाण के वह न केवल छूट ही जायेगा, बल्कि मुख्य अपराधी भी चौकन्ना हो उठेगा।
चिन्ता मत करो रहीम, अब वह स्वयं ही हमें सबकुछ बतायेगा आओ चलें।

अच्छा डॉक्टर, अब हमें इजाजत दीजिये। जरूरत पड़ी तो फिर मुलाकात होगी।
मुझे बेहद खुशी होगी राम। मेरी हार्दिक इच्छा है कि तुम दोनों इन मौत बेचने वाले शैतानों को जल्द-से-जल्द खत्म करो।

डॉक्टर भटनागर से विदा लेकर दोनों बाहर आकर अपनी मोटर साइकिल पर सवार हुए और
अब क्या प्रोग्राम है तुम्हारा?
फिलहाल सीधे घर चल रहे हैं। जो कुछ करना है, रात को करेंगे।

और रात के एक बजे जब दूर-दूर तक माहौल अंधकार और सन्नाटे में डूबा हुआ था—
यही है रतन मेडिको के मालिक रतनलाल का निवास स्थान?
हां, और शायद रतनलाल समेत सभी इस समय गहरी नींद सोये हुए हैं। मेरे पीछे आओ।

लेकिन भइया, भीतर प्रविष्ट कैसे होंगे? गेट बन्द है और चारदीवारी इतनी ऊंची है कि फलांगी नहीं जा सकती।
पिछवाड़े की ओर चलते हैं। हो सकता है वहां से भीतर प्रविष्ट होने का कोई मार्ग मिल जाए।

कोठी के पीछे पहुंचने पर—
बन गया काम। इस पेड़ पर चढ़कर हम आसानी से भीतर पहुंच सकते हैं।
ठीक है, तो पहले तुम ही चढ़ो ऊपर।
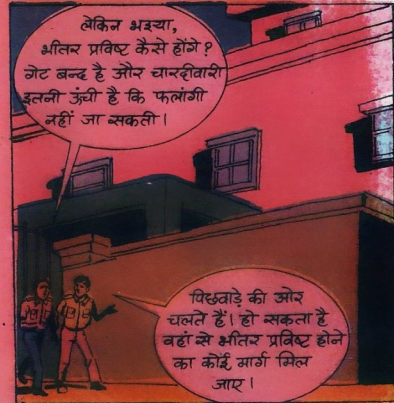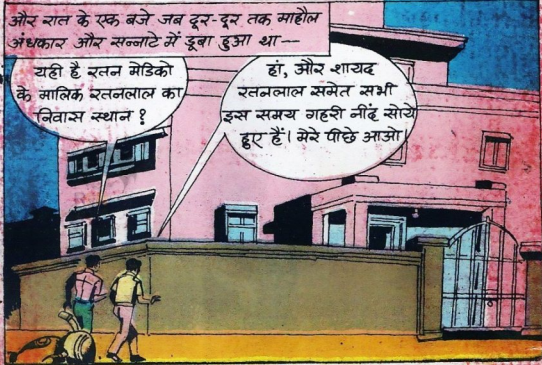
दोनों पेड़ पर चढ़ने लगे।

शीघ्र ही वे चारदीवारी के ऊपर झुकी पेड़ की एक डाल पर बैठे थे।

अगले ही पल राम भीतर की ओर झुकी हुई उस लोचदार टहनी को पकड़कर भीतर कूद गया।

फिर राम की तरह, रहीम को भी नीचे पहुंचने में देर नहीं लगी।
भीतर तो पहुंच गये, अब घर के भीतर प्रविष्ट होने का भी कोई उपाय करना होगा। आओ, सामने की ओर चलते हैं।
यदि आगे कुत्तों से वास्ता पड़ गया तो?

उस खतरे से निपटने के लिये ही मैं यह सायलेन्सर-युक्त रिवाल्वर लेता आया हूं। तुम भी अपना शिकारी चाकू निकाल लो।
गुड! यह तुमने अच्छा किया।

कुछ आगे बढ़ने पर—
वह देखो, एक खिड़की खुली है। उससे होकर हमें भीतर पहुंचने में कोई दिक्कत नहीं होगी!
लगता है, आज हमारे सितारे पूरी बुलन्दी पर हैं।

खिड़की काफी ऊंची थी।
तुम मुर्गा बन जाओ, तुम्हारी पीठ पर चढ़कर मैं आसानी से खिड़की तक पहुंच जाऊंगा।
मुर्गा तो मैं बन जाऊंगा भइया, लेकिन कहीं ऐसा न हो कि भीतर कोई हम मुर्गों को हलाल करने के इंतजार में तैयार बैठा हो।

ईश्वर ने शायद ऐसा कसाई अभी पैदा नहीं किया, तुम देर न करो।

और रहीम के मुर्गा बनते ही—
लगता है, मेरी जिन्दगी मुर्गा बनते-बनते ही खत्म हो जायेगी।

राम खिड़की फांदकर भीतर पहुंचा और उसने जेब से पेंसिल टार्च निकालकर जला ली।
हुम्म! ड्राइंगरूम मालूम पड़ता है। अब जल्दी से रहीम को भी अन्दर ले आना चाहिये!

निश्चिंत होने पर—
भीतर कोई खतरा नहीं। चलो थामो मेरा हाथ।

फिर राम ने रहीम का हाथ थामकर उसे भी भीतर खींच लिया।
चले आओ, लेकिन किसी भी खतरे से निपटने के लिये तैयार रहना।
चिन्ता मत करो।

लेकिन जैसे ही वे उस कमरे से बाहर निकले-
धांय-- धांय-- धांय
आ... ई... ई...
???
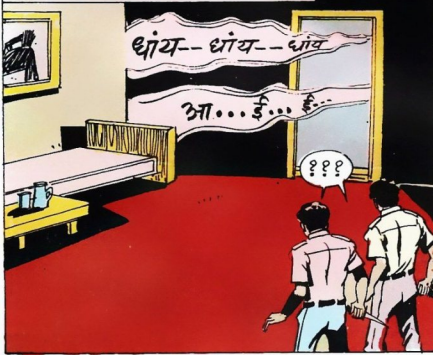
यह फायर और चीख!
चीख रतनलाल की ही लगती है और उस तरफ से आई है, चलो।

और दोनों पूरी शक्ति से उसी तरफ भागे, जिधर से चीख और फायरिंग की आवाज आई थी।
वह देखो, उस कमरे में प्रकाश है। शायद वहीं से फायरिंग और चीख की आवाज आई थी।

लेकिन जब वे दोनों उस कमरे में प्रविष्ट हुए—
सेठ रतनलाल!
ओ--नो!

तभी-
बचो!
उफ!
धांय... धांय...
राम-रहीम ने खतरे का आभास पाते ही गजब की फुर्ती के साथ अपने स्थान से छलांग लगाई और...

एक अलमारी की ओट में सुरक्षित पहुंचते ही राम ने उस हत्यारे को लक्ष्य लेकर एक साथ कई फायर उस पर झोंक मारे, लेकिन हत्यारा गोलियों से बचता हुआ पलटकर बाहर की ओर भाग खड़ा हुआ।
कम्बख्त, भाग रहा है!

राम और रहीम भी अपने-अपने स्थान से निकलकर उसके पीछे लपके।
बचकर न जाने पाए भइया!
अब उसके लिये यह असम्भव है।

हत्यारा कोठी से निकलकर मेनगेट की ओर दौड़ा, जो इस समय खुला हुआ था।
ओह! द्वार खुला है, लेकिन मैं उसे बचकर जाने नहीं दूंगा।
उफ! लगता है वह भाग निकलने में सफल हो जायेगा

अगले पल राम ने दौड़ते-दौड़ते ही हवा में एक जबरदस्त छलांग लगाई...
वो मारा!

—और—
आह!
हत्यारा धरती पर दूर तक लुढ़कता चला गया।

फिर इससे पहले कि वह उठकर खड़ा हो पाता, रहीम उसके सीने पर चढ़ बैठा।
बस-बस बच्चे, बहुत हो चुका। यदि अब ज्यादा चालाकी दिखाने की कोशिश की तो चेहरे पर जहन्नुम का नक्शा बना दूंगा।
शाबाश रहीम।

फिर शीघ्र ही राम भी उसके निकट पहुंच गया।
बताओ, तुमने रतनलाल का खून क्यों किया? जाली करेन्सी छापने वाला और नकली दवाइयां बनाने वाला कौन है?
नहीं-नहीं-मैं कुछ नहीं बता सकता। यदि मैंने कुछ भी बताया तो बॉस मुझे जान से मरवा देगा।

और यदि नहीं बताओगे तो हम भी तुम्हारा वैसा ही हाल कर देंगे, जैसा तुमने रतनलाल का किया है।
उफ!

रहीम द्वारा की गई जबरदस्त पिटाई से आखिरकार हत्यारे को घुटने टेकने ही पड़े।
ठ... ठहरो... मुझे मारो मत। मैं सबकुछ बताने के लिये तैयार हूं।
शाबाश! तो फिर जल्दी से शुरू हो जाओ।

परन्तु इससे पहले कि हत्यारा एक शब्द भी मुंह से निकाल पाता कि तभी गेट के बाहर खड़ी एक कार से गोलियों की बौछार हुई और—
धांय-धांय-धांय
आ... ई... ई...
??

गोलियां बरसाने के बाद वह कार तेजी से आगे बढ़ गई। राम-रहीम पूरी गति से बाहर खड़ी अपनी मोटर-साइकिल की ओर लपके—
कम्बख्त भाग रहा है...

...हमें उसे हर कीमत पर पकड़ना है, वरना अपराधी तक पहुंचने के सारे मार्ग बन्द हो जायेंगे।

परन्तु अपनी मोटर साइकिल के निकट पहुंचते ही दोनों ने अपना सिर पीट लिया।
सत्यानाश! दोनों पहियों की हवा निकली हुई है।
व्हाट?

तब तक कार उनकी पहुंच से काफी दूर हो चुकी थी।
उफ ! कम्बख्त निकल गया हाथ से। यह काम भी उसी सूअर का लगता है।

जब वह कार राम-रहीम की नजरों से ओझल हो गई —
मेरे विचार से हमें तुरन्त चीफ को सारी स्थिति से अवगत करा देना चाहिये।
हां, यही उचित होगा, आओ।

कुछ देर बाद राम रतनलाल की कोठी के भीतर ही एक कमरे में रखे फोन पर चीफ का नम्बर मिला रहा था।

उधर अचानक फोन की घंटी बजने से चीफ मुखर्जी की नींद टूट गई।
ट्रिन ट्रिन ट्रिन
दो बजे हैं, इतनी रात गये किसका फोन हो सकता है?

हैलो, एस. मुखर्जी इज हेयर!
हैलो चीफ अंकल! यह मैं हूं, राम।

ओह तुम! कहो, क्या बात है?
मि. रतनलाल का एक बदमाश ने खून कर दिया है और इस समय मैं रतनलाल की कोठी से बोल रहा हूं।
क्या?
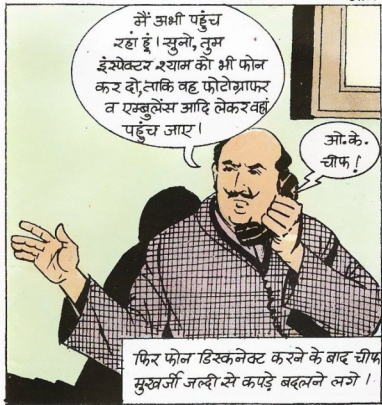
मैं अभी पहुंच रहा हूं। सुनो, तुम इंस्पेक्टर श्याम को भी फोन कर दो, ताकि वह फोटोग्राफर व एम्बुलेंस आदि लेकर वहां पहुंच जाए।
ओ.के. चीफ!
फिर फोन डिस्कनेक्ट करने के बाद चीफ मुखर्जी जल्दी से कपड़े बदलने लगे।

और कुछ देर बाद चीफ मुखर्जी के साथ-साथ इंस्पेक्टर श्याम भी अपने दल-बल के साथ सेठ रतनलाल की कोठी पर था।
इंस्पेक्टर, अब इसमें कोई सन्देह नहीं रहा कि रतनलाल नकली दवाई बनाने वाले गिरोह का एक एजेण्ट था और यह बदमाश भी उसी गिरोह का एक गुर्गा।
यही बात लगती है। मेरे विचार से हमें कोठी की तलाशी लेनी चाहिए...

...हो सकता है कोई ऐसा सूत्र हाथ लग जाए, जो हमें मुख्य अपराधी तक पहुंचा दे।
मैं भी यही कहना चाहता था! आओ भीतर चलें।

इंस्पेक्टर श्याम ने तुरन्त सिपाहियों को कोठी की तलाशी लेने का आदेश दिया और स्वयं चीफ मुखर्जी और राम-रहीम के साथ उस कमरे में पहुंच गया, जहां रतनलाल की लाश पड़ी थी।
रामसिंह, फोटोग्राफर जब अपना काम निपटा ले तो दोनों लाशों को पोस्टमार्टम के लिये भेज देना।
यस सर!

तभी तलाशी ले रहे सिपाहियों में से एक ने वहां प्रवेश किया।
सर, नकली दवाइयां तो हमें नहीं मिलीं, लेकिन एक अन्डर ग्राऊंड तहखाने में लाखों के नोट पड़े हैं।
क्या?
ओह!

तुरन्त चीफ मुखर्जी, राम-रहीम और इंस्पेक्टर श्याम उस सिपाही के साथ एक ऐसे कमरे में पहुंचे, जहां से तहखाने में जाने का मार्ग था।
सर, संयोग से मेरा हाथ इस तस्वीर पर पड़ गया था। इसके घूमते ही यह गुप्त मार्ग निकल आया था।
हुम्म! नीचे चलो।

चीफ से विदा लेकर राम-रहीम ने निकट के ही टैक्सी स्टैण्ड से एक टैक्सी पकड़ी और अपने घर की ओर चल पड़े। अपनी मोटर साइकिल उन्होंने वहीं छोड़ दी थी।

मेरे विचार से रामनगर जाने का प्रोग्राम अब कैन्सिल ही करना पड़ेगा।

हो सकता है, लेकिन यह श्याम अंकल की कल मिलने वाली रिपोर्ट पर निर्भर करता है।

...वह भीतर की ओर बढ़ा।
सबसे पहले बॉस को सारी स्थिति से अवगत करा देना ही उचित होगा!

बंगले के भीतर एक कमरे में पहुंचकर उसने एक गुप्त अलमारी से एक छोटा-सा, किन्तु शक्तिशाली ट्रांसमीटर निकाला और अपने बॉस से सम्पर्क जोड़ने लगा।
हैलो-हैलो-पेड्रो कालिंग! हैलो-हैलो-वान्टेड ब्लैकमैन!

शीघ्र ही पेड्रो के रहस्यमय बॉस ने अपने ट्रांसमीटर पर उसकी आवाज कैच की।
यस, ब्लैकमैन रिसीविंग-तुम कौन बोल रहे हो?
मैं पेड्रो बोल रहा हूं बॉस!
रिपोर्ट!

बॉस, आपके आदेशानुसार टोनी ने रतनलाल को ठिकाने लगा दिया था, लेकिन वह खुद भी राम-रहीम के शिकंजे में फंस गया था। अतः मजबूरी में मुझे उसे भी ठिकाने लगाना पड़ा।
वेरी गुड! यह तुमने बहुत अच्छा किया...

...हम यह कदापि पसंद नहीं करते कि पुलिस को हमारे बारे में एक शब्द भी मालूम हो। हम तुमसे प्रसन्न हैं।
धन्यवाद बॉस। मेरे लिये कोई और आदेश?

हां, सुनो। रतनलाल की कोठी की तलाशी में पुलिस के हाथ हमारे जाली नोट लग चुके हैं और पुलिस रतनलाल के तीनों सेल्समैनों को गिरफ्तार करने के चक्कर में है। तुम्हें उनमें से एक सेल्समैन केशव का मुंह किसी भी कीमत पर बन्द करना है।
समझ गया बॉस, आप निश्चिंत रहें।

गुड! बाकी बातें सुबह होंगी, ओवर एण्ड आल।
ओ.के. बॉस, ओवर एण्ड आल।

शुक्र है, बॉस मेरे कार्य से नाराज नहीं हुए। अब जल्दी से केशव की टोह लूं। कहीं ऐसा न हो कि मेरे पहुंचने से पहले ही पुलिस उससे सब कुछ उगलवा ले।
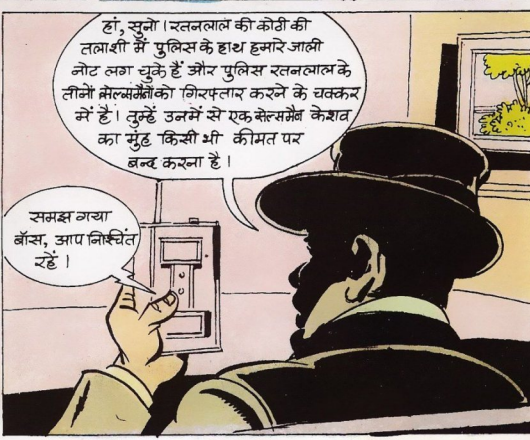
उधर इंस्पेक्टर श्याम ने भोर होने से पहले ही रतन मेडिको के तीनों सेल्समैनों को उनके घर से गिरफ्तार कर रतनलाल की दुकान पर छापा मारा और दुकान के नीचे ही बने एक अन्डर-ग्राऊंड तहखाने में पहुंचने में सफल हो गया।
ओह माई गॉड! इतनी तादाद में नकली दवाइयां!

फिर तमाम नकली दवाओं की पेटियों को जब्त करने और दुकान को सीलबंद करने के पश्चात् इंस्पेक्टर श्याम तीनों सेल्समैनों को लेकर थाने पहुंचा।
क्या नाम है तुम लोगों के?
कमल।
सुरेश!
केशव।

हुम्म! ये नकली दवाइयां तुम्हारी दुकान पर कहां से आती थीं और इनका निर्माण करने वाला कौन है और इनकी फैक्ट्री कहां है?
यह...यह हमें नहीं मालूम!

खामोश!

सुनो, तुम तीनों की भलाई इसी में है कि सबकुछ सच-सच बता दो, वरना याद रखो, मार-मारकर खाल उतार दी जायेगी।
हम सच कहते हैं इंस्पेक्टर साहब! हमें इसके सिवा कुछ मालूम नहीं कि एक काले रंग की वेन हर सप्ताह आती थी...

... और कुछ पेटियां उतरकर चली जाती थी। उन पेटियों को रतन सेठ केशव द्वारा ही अन्डर ग्राऊंड गोदाम में रखवाते थे और केशव ही उनके कहने पर वह दवाइयां वहां से लाकर ग्राहकों को देता था।
हां साहब, यह सच है।

यानी तुम दोनों यह कहना चाहते हो कि केवल केशव ही इस सम्बन्ध में जानता है।
ज... जी हां, सेठजी इसी पर हम सबसे ज्यादा विश्वास करते थे।

तुरन्त इंस्पेक्टर श्याम की खूनी दृष्टि केशव के चेहरे पर स्थिर हो गयी।
मेरे विचार से अब तुम झूठ नहीं बोलोगे। और जो कुछ जानते हो, सच-सच बता दोगे।
य... ये झूठ बोलते हैं, मुझे कुछ नहीं मालूम। इनकी तरह मैं भी सेठ की हर बात से अनभिज्ञ हूं।

क्रोध से बिफरता हुआ श्याम एकदम से केशव पर टूट पड़ा।
कुत्ते, सूअर, तुम बातों से नहीं, लातों से मानोगे।
आ... ई... ई... उफ...!

बताओ!
नहीं-नहीं, मुझे कुछ नहीं मालूम। आह!

अब भी बता दो।
उफ! नहींऽऽ

हाय मरा!

बोलो, सच्चाई बताने को तैयार हो या नहीं।
आह! अ-ऊफ

शीघ्र ही—
ठहरिये-ठहरिये—मुझे और मत मारिये इन्स्पेक्टर साहब! मैं सबकुछ बताने के लिये तैयार हूं।
गुड, अब आये रास्ते पर!

उस समय पेड्रो पुलिस स्टेशन के ठीक सामने की इमारत की एक खिड़की पर मौजूद था।
कम्बख्त ने घुटने टेक दिये हैं। अब देर करना उचित नहीं होगा।

बताओ, ये नकली दवाएं कौन बनाता है और इनका कारखाना कहां है? ध्यान रहे, एक भी बात झूठी निकली तो...
नहीं-नहीं, मैं सबकुछ सच-सच बताऊंगा। दवाएं कौन बनाता है, यह तो मुझे नहीं मालूम, लेकिन दवाइयां और जाली करेन्सी...

धांय
...राम...न...
ओह! नहीं!
आ...ई...ई...

गोली लगते ही केशव के प्राण पखेरू उड़ गये। इंस्पेक्टर श्याम को समझते देर नहीं लगी कि गोली कहां से चलाई गई है, अतः वह तुरन्त चीख उठा—
सिपाहियो, हत्यारा उस इमारत में है। जल्दी से इमारत को चारों ओर से घेर लो। वह बचकर निकलना नहीं चाहिये।
यस सर!

लेकिन जैसे ही श्याम सिपाहियों के साथ थाने से निकलकर सड़क पर पहुंचा, ठीक उसी समय पेड्रो सामने की इमारत से निकलकर एक तरफ खड़ी अपनी कार की ओर दौड़ा।
खबरदार! रुक जाओ, वरना गोली मार दूंगा।

परन्तु पेड्रो रुका नहीं और कार में सवार होकर भाग निकला।
धांय-धांय

इं० श्याम ने फायरिंग कर कार का टायर बर्स्ट करना चाहा, लेकिन उसे सफलता नहीं मिली और—
उफ! कम्बख्त निकल गया!

अगले दिन भोर का उजाला फैलने के साथ ही टेलीफोन की घंटी बजी और राम-रहीम की नींद टूट गई।
इस कम्बख्त टेलीफोन ने भी नाक में दम कर रखा है। न रात को चैन, न दिन को चैन। जी चाहता है, उठाकर बाहर फेंक दूं।
जरूर फेंक देना, लेकिन पहले मैं फोन सुन तो लूं।
क्रिन-क्रिन

हैलो- राम स्पीकिंग।
राम, मैं इन्स्पेक्टर श्याम बोल रहा हूं। रतन मेडिको के तीन सेल्समैनों में से एक व्यक्ति केशव का थाने में ही खून कर दिया गया है।

क्या?

दूसरी ओर से पूरी बात सुनने के पश्चात्—
इसका मतलब यह हुआ कि उन तीनों में से केशव को ही अपराधी के बारे में सबकुछ मालूम था, इसलिए उसे ही मार्ग से साफ कर दिया गया है।

किसका फोन था भइया ?
इंस्पेक्टर श्याम का। रतन मैडिको के सेल्समैन केशव का थाने में ही खून कर दिया गया है। मरते हुए उसके मुंह से केवल 'राम' ही निकला था।

बेचारा, आखिर वह तुम्हारा यानी भगवान् राम का नाम लेकर स्वर्ग सिधार गया!
'राम' से मेरा अथवा भगवान राम का नाम ही नहीं बनता रहीम, बल्कि 'रामनगर' भी बनता है।

अरे! यह तो मैंने सोचा ही नहीं था। इसका मतलब यह हुआ कि अपराधियों का कोई-न-कोई सम्बन्ध रामनगर से अवश्य है!
बिल्कुल, अब तुम फटाफट तैयार हो जाओ। तब तक मैं चीफ अंकल को फोन कर लूं। उसके बाद हम तुरन्त रामनगर के लिये रवाना हो जायेंगे। अब मैं कतई भी समय नष्ट करने के मूड में नहीं हूं।

ठीक है, तुम फोन कर लो। मैं अभी तैयार होकर आता हूं।

साथ में एक अटैची भी तैयार कर लेना।
ओ.के.!

चीफ से सम्बन्ध स्थापित होने पर राम ने उन्हें इंस्पेक्टर श्याम से हुई सारी बातचीत सुनाई, फिर अन्त में बोला—
इससे स्पष्ट हो जाता है चीफ कि अपराधियों का कोई-न-कोई सम्बन्ध रामनगर से अवश्य है। अत: हम ग्यारह बजे वाली ट्रेन से रामनगर के लिये रवाना हो रहे हैं।
ठीक है, मेरे बच्चो! तुम मुझे वाच ट्रांसमीटर पर हर पल की रिपोर्ट देते रहना, लेकिन सावधान रहना...

...हो सकता है अपराधी तुम्हें भी अपने मार्ग का कांटा समझकर ठिकाने लगाने की कोशिश करे।
आप चिन्ता न करें चीफ! हम अपनी हिफाजत करना खूब अच्छी तरह जानते हैं।
इसी के साथ दूसरी ओर से सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

उधर पेड्रो अपने बंगले में ट्रांसमीटर पर अपने बॉस को रिपोर्ट दे रहा था।
बॉस, मैंने केशव को खत्म कर दिया है। कम्बख्त इंस्पेक्टर श्याम ने तो मुझे घेरने की काफी कोशिश की थी, लेकिन...
मैं जानता हूं पेड्रो। निःसंन्देह मुझे तुम पर गर्व है। एक तगड़े इनाम के आज से तुम हकदार रहे...

...लेकिन सुनो, वे दोनों खतरनाक छोकरे राम-रहीम हमारे काम में जरूरत से ज्यादा रुकावट डालने की कोशिश कर रहे हैं। अतः मैं चाहता हूं कि उन दोनों का किस्सा भी हमेशा-हमेशा के लिए खत्म कर दिया जाए।

आपके हुक्म की देर है बॉस। कल सुबह तक उनकी लाशों का भी किसी को पता नहीं चलेगा।
गुड! सुनो, कुछ देर बाद रामनगर जाने के लिये वे दोनों छोकरे ग्यारह बजे की ट्रेन पकड़ने वाले हैं...

...और मैं चाहता हूं कि रामनगर पहुंचने से पहले ही उन दोनों की समाधि ट्रेन में ही बन जाए।
समझ गया बॉस। अब आप जरा भी चिन्ता न करें।

सुनो, जिस ट्रेन से वे दोनों जा रहे हैं, उसी ट्रेन और उन्हीं के कम्पार्टमेंट की एक टिकट कुछ देर में तुम्हारे पास भी पहुंच जाएगी।
बहुत अच्छा बॉस। तब तक मैं बाकी की तैयारी पूरी किये लेता हूं।

ट्रांसमीटर ऑफ करने के पश्चात्—
आश्चर्य है, बॉस को पुलिस के साथ-साथ हमारी गतिविधियों का भी पहले से ही कैसे पता चल जाता है? उसे कैसे मालूम हुआ कि राम-रहीम ग्यारह बजे वाली ट्रेन से रामनगर जा रहे हैं?

इधर -
राजगढ़ रेलवे स्टेश
जल्दी करो रहीम, ग्यारह बजने में केवल पांच मिनट ही शेष हैं।
चिन्ता मत करो, सिर्फ तीन मिनट में ही हम अपने कूपे में होंगे।

रामनगर जाने वाली ट्रेन अपने प्लेटफार्म पर तैयार खड़ी थी।
इस बोगी में ही हमारी रिजर्वेशन है, चले आओ।
1 CLASS
RAM NAGAR
शुक्र है, कम-से-कम डिब्बे को तलाश करने में तो समय बरबाद नहीं करना पड़ा।

और राम-रहीम जैसे ही अपनी सीटों पर पहुंचे, ट्रेन व्हिसल देने के पश्चात् स्टार्ट हो गई।
बिल्कुल ठीक समय पर पहुंचे।
हां, लेकिन अब देखना यह है कि हम रामनगर भी ठीक-ठाक पहुंचते हैं या नहीं। लो, इस बैग को भी वहीं रखो।

उसी कम्पार्टमेंट में पेड्रो का भी रिजर्वेशन था।
रामनगर, हुंह... छोकरो, रामनगर तो क्या, अब तो अपना शहर भी नहीं देख पाओगे तुम।

मेरे विचार से हम सुबह तक रामनगर पहुंचेंगे।
हां, सुबह आठ बजे के लगभग।

लगभग एक घंटे तक लगातार दौड़ते रहने के पश्चात् ट्रेन जब एक जंक्शन पर रुकी तो पेड्रो अचानक ही अपनी सीट से उठ खड़ा हुआ।
माफ कीजियेगा, मुझे यहीं उतरना है।
ऑफकोर्स! लीजिए, आगे बढ़िये।

ट्रेन से नीचे उतरते ही पेड्रो से एक आदमी टकराया।
क्या रहा ?
टाइम बम मैंने उन दोनों की सीट के नीचे रख दिया है। ठीक पन्द्रह मिनट बाद फटेगा और...हा...हा...हा...!

इधर राम-रहीम के कम्पार्टमेण्ट में
चोर-चोर-पकड़ो-पकड़ो! हाय मेरा बैग।
!!!
!!!
खबरदार, जो मेरे सामने कोई आया।

चोर-चोर- अरे, कोई पकड़ो उसे। वह मेरा सारा रुपया ले गया।
वह कम्बख्त हमारे सामने ही दिलेरी दिखा रहा है। अभी चखाता हूं मजा!

चोर पकड़े जाने के भय से बजाए प्लेटफार्म पर उतरने के दूसरी ओर से उतरकर पटरियों पर दौड़ पड़ा।
रहीम, उसके चाकू से सावधान रहना।
चिन्ता न करो।

रुक जाओ, वरना जान से हाथ धो बैठोगे।
आने दो, इन चूहे के बच्चों से तो मैं निपट लूंगा।

जब रहीम ने चोर को रुकते नहीं देखा तो उसने हवा में एक जबरदस्त लम्बी उछाल भरी और —
हमारे रहते तुम बचकर नहीं जा सकते बेटा!
आह!

- क्या पेड्रो द्वारा छिपाया गया टाइम बम राम-रहीम को मौत के घाट उतार सका?
- क्या मौत बेचने और देश की अर्थ-व्यवस्था को अव्यवस्थित करने वाले अपराधी पकड़े जा सके?
- ब्लैकमैन उर्फ मुख्य अपराधी को राम-रहीम की गति विधियों की जानकारी पहले से ही कैसे हो जाती थी?
- ब्लैक मैन जाली नोट और नकली दवाइयों का निर्माण करके आखिर अपना कौन-सा प्रतिशोध पूरा करना चाहता था?

इन सब प्रश्नों का उत्तर जानने के लिये 'मनोज चित्रकथा' के आगामी अंक में पढ़ें —

"कानून का शिकंजा!"

मुद्रक : गोयल आफसैट वर्क्स, दिल्ली